International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजस्थान में तीर्थराज की अवधारणा (मचकुण्ड का विशेष अध्ययन)

बहादुर सिंह[1], डॉ. राजश्री सेठी[2]

[1]शोधार्थी महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
[2]सहायक आचार्य (इतिहास विभाग) माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

सारांश

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में तीर्थ केवल धार्मिक स्थल न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र रहे हैं। इन्हीं में से कुछ तीर्थ अपनी पौराणिक प्राचीनता, ग्रन्थीय मान्यता तथा लोकआस्था व निरंतर अनुष्ठानिक परंपरा के कारण 'तीर्थराज' की संज्ञा प्राप्त करते हैं। राजस्थान में तीर्थराज की अवधारणा विशेष महत्व रखती है, जहाँ का इतिहास वीरता और बलिदानों से भरा पड़ा है और यहाँ जलस्रोतों, सरोवरों और गुफा स्थलों ने धार्मिक जीवन को संरक्षित व पोषित किया। यह शोध राजस्थान में तीर्थराज की अवधारणा का अध्ययन करते हुए धौलपुर स्थित 'मचकुण्ड' को विशेष संदर्भ के रूप में प्रस्तुत करता है। मचकुण्ड का उल्लेख श्रीमदभागवतपुराण, विष्णुपुराण एवं अन्य पौराणिक ग्रन्थों में सूर्यवंशी राजा 'मचकुण्ड' से संबंधित कथा के माध्यम से प्राप्त होता है, जो इस स्थल को त्रेतायुगीन परंपरा से जोड़ता है। कालियवन–वध तथा श्रीकृष्ण की उपस्थिति मचकुण्ड को वैष्णव परम्परा में प्रमुख स्थान प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त मचकुण्ड में स्थित सरोवर, गुफाएँ व तपोस्थली इसे केवल पौराणिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक ऐतिहासिक तीर्थ के रूप में विशिष्टता प्रदान करते हैं। यह शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि राजस्थान में तीर्थराज की अवधारणा केवल ग्रन्थीय मान्यता पर आधारित नहीं है, बल्कि उसमें लोकविश्वास, मेले, सामूहिक स्नान परंपरा, सामाजिक समरसता व निरंतरता जैसे तत्व भी दिखाई देते हैं। इसी तीर्थराज की अवधारणा के तहत् धौलपुर स्थित मचकुण्ड को विशेष संदर्भ के रूप में इस शोध में प्रस्तुत किया गया है।

कुंजी शब्द–तीर्थराज, लोक आस्था, पौराणिक प्राचीनता, वैष्णव परंपरा, सामाजिक समरसता, राजा मुचुकुंड।

अध्ययन का महत्व

आधुनिक वैज्ञानिक युग में समाज में पश्चिम का अंधानुकरण प्रभावी है अतः स्वयं के धार्मिक–सांस्कृतिक महत्व को नकारते हुए विदेशी संस्कृति को अपनाना गौरव का विषय बनता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों के कारण समाज में उन परम्पराओं का लोप होता जा रहा है जो प्राचीनकाल से हमारी धार्मिक–सांस्कृतिक पहचान रही है और इन्हीं धार्मिक–सांस्कृतिक रीति–रिवाजों के कारण हमारी भारतीय सभ्यता संस्कृति विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस शोध का महत्व तीर्थराज मचकुण्ड के माध्यम से इन्हीं परम्पराओं के महत्व को इंगित करना है तथा मचकुण्ड के विशेष संदर्भ में यह शोध तीर्थराज की संकल्पना को सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दोनों स्तरों पर समझने में सहायक होगा। इसके साथ ही यह शोध मचकुण्ड जैसे प्राचीन तीर्थ का व्यवस्थित अकादमिक अध्ययन उपलब्ध न होने के कारण शोध–रिक्तता की पूर्ति करता है। मचकुण्ड मेले के माध्यम से यह शोध तीर्थों की ऐतिहासिक, सामाजिक व सांस्कृतिक निरंतरता व महत्व को रेखांकित करता है।

उद्देश्य

उपर्युक्त शोध विषय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1ण् मचकुण्ड का ऐतिहासिक व पुरातात्विक अध्ययन प्रस्तुत करना।

2ण मचकुण्ड के तीर्थीय महत्व का अध्ययन तथा पौराणिक विश्लेषण करना।
3ण सांस्कृतिक विकास में मचकुण्ड मेले के महत्व को प्रस्तुत करना।
4ण मचकुण्ड के माध्यम से धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन संबंधी भूमिका का विश्लेषण करना।
5ण तीर्थ संबंधी अवधारणा, प्रकार व महत्व का अध्ययन करना।

शोध विधि

उपर्युक्त शोध हेतु आंकड़ों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक स्रोत के माध्यम से प्राप्त किया गया है। प्राथमिक स्रोतों से मचकुण्ड से संबंधित धार्मिक व पौराणिक कथाओं की जानकारी तथा मचकुण्ड की पौराणिक कथाओं की जानकारी तथा मचकुण्ड की पौराणिक व ऐतिहासिक पहचान का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। वहीं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से मचकुण्ड का भौगोलिक, सांस्कृतिक व क्षेत्रीय अध्ययन, धौलपुर जिला मुख्यालय से दूरी व यातायात व्यवस्था की जानकारी प्रस्तुत की गई है।

उपलब्ध साहित्य का अवलोकन

श्रीमद्भागवत् पुराण के स्कंध 10 में मचकुण्ड कालियवन–कृष्ण प्रसंग का वर्णन किया गया है, जो मचकुण्ड की पौराणिक पहचान का मूल स्रोत है।

हरिवंश पुराण में मचकुण्ड संबंधी श्रीकृष्ण कालियवन युद्ध प्रसंग का वर्णन है, जिसमें मचकुण्ड को राजा मुचकुन्द की गुफा व तपोस्थली के रूप में वर्णित किया गया है।

विष्णु पुराण में सूर्यवंशी राजा मुचकुन्द की वंशावली का वर्णन किया गया है, जो सूर्यवंश के चौबीसवें राजा के रूप में वर्णित है।

वाल्मीकि रामायण में सूर्यवंशी राजाओं का विवरण दिया गया है जो मचकुण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक हैं।

भरतपुर संभाग–जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मोहनलाल गुप्ता द्वारा लिखित इस पुस्तक में मचकुण्ड का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इसमें मचकुण्ड की भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक जानकारी प्रदान की गई है। मचकुण्ड मेले का वर्णन तथा राजा मुचुकुन्द की कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है।

राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत

डॉ. हुकुम चन्द जैन व डॉ. नारायण लाल माली द्वारा लिखित तथा हिंदी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित उपर्युक्त पुस्तक में मचकुण्ड को चर्म रोगों को दूर करने वाले स्थल के रूप में प्रस्तुत किया गया है और साथ ही मचकुण्ड स्थित कमल फूल बाग का वर्णन किया गया है।

एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान

कर्नल जेम्स टॉड द्वारा लिखित उपर्युक्त ग्रन्थ में धार्मिक स्थलों व जनश्रुतियों का प्रारंभिक यूरोपीय विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें मचकुण्ड संबंधी विवरण भी देखने को मिलता है।

राजस्थान के तीर्थ

परमेश्वर द्विरेफ द्वारा संपादित उपर्युक्त पुस्तक में तीर्थ संबंधी अवधारणा, परिभाषा, महत्व व प्रासंगिकता का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके साथ ही इसमें तीर्थों के प्रकार व महत्व का भी वर्णन किया गया है।

परिचय

तीर्थ शब्द का अर्थ है–पवित्र करने वाला या तारने वाला। 'तू–प्लवन तरर गयोः' धातु से 'पात्तुदि वचि रिचि सिचिम्य स्थक्'–इस उणादि सूत्र द्वारा थक् प्रत्यय करने पर तीर्यते अनेन जिससे तर जाता है। इस अर्थ में तीर्थ या अर्धचादि तीर्थः शब्द निफन्न होता है।

अमर कोशकार अमरसिंह ने जलावतार अर्थात् नहीं आदि में थाह या पार करने का स्नान अर्थात् धार या उपकूप अथवा जलाशय को शास्त्र को ऋषि से संवित जल को और गुरु को तीर्थ बताया है। आचार्य हेमचन्द्र भी ऋषि सेवित जल को तीर्थ मानते हैं।

जिसके द्वारा मनुष्य पापादिकों से मुक्त हो जाय, तर जाय उसका नाम तीर्थ है। "तरति पापादिकं यस्मात'। तीर्थ शब्द का आधुनिक विवेचन करें तो, ती से तीन एवं र्थ से अर्थ के संबंध में प्रयोजन लेना चाहिए अर्थात् जिसके तीन अर्थों–धर्म, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हो वह तीर्थ कहलाता है। पदार्थ चार है जिन्हें पुरुषार्थ भी कहते हैं–धर्म, अर्थ, काम मोक्ष। इनमें अर्थ तो तीर्थयात्रा में व्यय होगा ही, बाकी तीनों धर्म, काम, मोक्ष की सिद्धि तीर्थयात्रा से होती है। सामान्यतः तीर्थ का शाब्दिक अर्थ है–नदी पार करने का स्थान घाट रूढ़ शब्द में उस नदी, सरोवर, मंदिर या भूमि को तीर्थ कहा जाता है जहाँ ऐसी दिव्य शक्ति है कि उसके संपर्क में (स्नानादि के द्वारा) जाने पर मनुष्य के पाप अज्ञात रूप से नष्ट हो जाते हैं। यह सामान्यतः देखा गया है कि जहाँ तीर्थ है वहाँ के नद–नदी, कूप, सरोवर आदि में स्नान से ही तीर्थयात्रा सफल मानी जाती है।

तीर्थ शब्द के अन्य अर्थों में देखा जाये तो जहाँ श्री भगवान की कथा होती है वह स्थान तीर्थ है। शास्त्र यज्ञ क्षेत्र, समदानादि उपाय, गुरु मंत्रों, अवतार तथा स्त्री रज को भी तीर्थ कहा जाता है। वीर शैवों के अष्ट वर्ग संस्कार में एक संस्कार का नाम भी तीर्थ है। भगवान का चरणोदक भी तीर्थ कहलाता है।

तीर्थ के प्रकार

तीर्थ के तीन प्रकार बताये गये हैं–

1ण नित्य तीर्थ–कैलाश मानसरोवर, काशी, पुष्कर, मुचकुन्द, लोहार्गल, गंगा, यमुना, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, गण्डकी, सरयु आदि पवित्र नदियाँ नित्य तीर्थ हैं।

2ण भगवदीय तीर्थ–जहाँ भगवान ने अवतार लिया, लीला की या किसी भक्त को दर्शन दिये वे स्थान भगवदीय तीर्थ हैं।

3ण संत तीर्थ–जो जीवनमुक्त देहातीत परम भागवत या भगवत्प्रेम में तन्मय सन्त हैं, वे मूर्तिमान तीर्थ हैं तथा उनको जन्मभूमि या तपोभूमि या निर्वाण भूमि भी कहा जाता है। इस प्रकार यह कैलाश से कन्याकुमारी तक और कच्छ से कामाख्या तक सम्पूर्ण भारतभूमि तीर्थ है और परम पवित्र है।

प्रकारान्तर से जंगम, मानस एवं भौम–ये तीन तीर्थों के प्रकार है।

जंगम तीर्थ–निर्मलचित्त ब्राह्मण, सन्तजन, जंगम तीर्थ कहे गये हैं। इनके सदवाक्य रूप निर्मल जल से मलिन जन शुद्ध होते हैं। "मुदमंगलमय संत समाजु–जो जग जंगम तीरथ राजु।"

मानस तीर्थ–सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, दया, सरलता, मृदुभाषण, ब्रह्मचर्य, दान, ज्ञान, दम, धृति, पुण्य में मानस तीर्थ शास्त्रकारों ने कहे हैं। मनः शुद्धि को सर्वोत्तम तीर्थ कहा गया है।

भौम तीर्थ–जिस प्रकार शरीर के कुछ अंग पवित्र तथा श्रेष्ठ समझते जाते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी के कुछ विशेष भाग महत्वपूर्ण हैं। इसमें भूमि का प्रभाव एवं जल का तेज भी मुनि महात्माओं का परिग्रह–आवासादि आदि की पवित्रता हेतु है।

महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है–

"प्रभावाद् अद्भुताद भूमेः सलिलस्थ च तेजसा।
परिग्रहान्मुनिनां चैव तीर्थानां पुण्यता माता।।"

तीर्थों का महत्व

ऋग्वेद में–तीर्थराज प्रयाग में दानादि करने वालों को स्वर्ग प्राप्ति की बात कही गई है।

अथर्ववेद–कहता है कि तीर्थों के सेवन से बड़े–बड़े पाप कट जाते हैं। बड़े–बड़े यज्ञानुष्ठानों का जो फल है, वही तीर्थ स्थान का फल है।

यजुर्वेद–भगवान को तीर्थ में, नदी के जल में तथा तट में तटवर्ती छोटी–छोटी तरंगों में, कुशांकुरों में तथा जल के फेन में निवास करने वाला कहकर नमस्कार करता है–

"नमस्तीर्थाय च कुल्याय च नमः शप्याय च फेन्याय च।"

विष्णु स्मृति के अनुसार महापातकी–उपपातकी सभी तीर्थानुसरण से शुद्ध हो जाते हैं। जो शुद्धि अश्वमेघ से संभव है वहीं तीर्थयात्रा से सुलभ है।

तीर्थयात्रा का फल

श्रद्धारहित, तीर्थ में पाप करने वाले, नास्तिक, संशयात्मा तथा कुतर्की को तीर्थयात्रा का फल नहीं मिलता।

तीर्थयात्रा का फल यात्री को श्रद्धानुसार मिलता है।

"मन्त्रे, तीर्थे, द्विजे, देवे, दैवज्ञ, भेषजे, गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।"

इसी तीर्थ संबंधी अवधारणा के तहत् जब कुछ तीर्थ अपनी पौराणिक प्राचीनता, ग्रन्थीय मान्यता, लोक आस्था तथा निरन्तर अनुष्ठानिक परम्परा के कारण प्रसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं तो उन्हें 'तीर्थराज' की संज्ञा दी जाती है–जैसे प्रयागराज, पुष्कर, मचकुण्ड, अमरकंटक आदि।

राजस्थान में जिस प्रकार पुष्कर को तीर्थों का मामा कहा जाता है, उसी प्रकार मचकुण्ड को तीर्थों का भान्जा की संज्ञा दी जाती है। यह राजस्थान मचकुण्ड तीर्थ के धार्मिक–सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है।

मचकुण्ड तीर्थ

इसे मुचकुन्द के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान में मचकुण्ड को तीर्थों को भांजा की विशेष संज्ञा प्रदान की गई है, जो इसके ऐतिहासिक–पौराणिक व धार्मिक महत्व को प्रकट करता है।

धौलपुर से पाँच किलोमीटर दूर पहाड़ियों की तलहटी में स्थित मचकुण्ड तीर्थ हिन्दुओं के लिए विशेष महत्व रखता है। प्राकृतिक दृश्यावली में अंकित यह सुन्दर स्थान सूर्यवंश के चौबीसवें राजा मुचकुन्द से सम्बन्धित माना जाता है, जो भगवान राम से 19 पीढ़ी पहले हुए थे। इस स्थान पर आस–पास की पहाड़ियों से जल आता रहता है और एक विशाल कुण्ड में जमा हो जाता है। इस विशाल एवं गहरे जलकुण्ड के चारों और पाल राजाओं के काल (775 ई. से 915 ई.) के मंदिर बने हुए हैं। अकबर ने भी यहाँ पर निर्माण कार्य करवाया था। आगरा–बम्बई रोड़ पर धौलपुर से 5 किलोमीटर दूर चम्बल नदी पर एक बड़ा पुल बना हुआ है। यह पुल उत्तरी भारत को शेष भारत से जोड़ने के लिए किसी समय बहुत महतवपूर्ण माना जाता था। धौलपुर की संस्कृति में उत्तर–प्रदेश और मध्य प्रदेश की संस्कृतियों का प्रभाव अधिक है। मारवाड़ी, मेवाड़ी अथवा ढूँढ़ाड़ी संस्कृति के दर्शन यहाँ ब्रज संस्कृति के रंग में ही होते हैं। मचकुण्ड में आश्विन शुक्ला पंचमी को शरद मेला तथा भादो शुक्ला छठ को देवछठ मेला बड़े उत्साह से आयोजित किया जाता है। मचकुण्ड मेले में सामाजिक सद्भाव व समरसता का वातावरण देखने को मिलता है।

पौराणिक संदर्भ के अनुसार प्राचीनकाल में जब देवताओं व राक्षसों में संग्राम हुआ तो इक्ष्वाकु वंश के राजा मान्धाता के महाबली पुत्र चक्रवर्ती राजा मुचकुन्द द्वारा देवताओं की ओर से युद्ध लड़ते–लड़ते कई युग बीत गए और अंत में कार्तिकेय जी की सहायता से देवताओं को युद्ध में सफलता प्राप्त हुई। विजय से प्रसन्न देवताओं ने जब महाराजा मुचकुन्द से वर मांगने का आग्रह किया तो युद्ध में थके होने के कारण उन्होंने विश्राम करने के इरादे से निद्रा का वर मांगा और कहा कि जो व्यक्ति मुझे सोते हुए जगा देगा, वह मेरी कोप दृष्टि से जलकर भस्म हेा जायेगा। युद्ध में थके राजा मुचकुन्द ने गन्धमाधन पर्वत की गुफा (वर्तमान में मौनी सिद्ध बाबा का पहाड़) में प्रवेश किया और वरदान के अनुसार गहरी निद्रा में सो गये।

त्रेता युग में सोये मुचकुन्द द्वापर युग में भी सोते रहे। द्वापर युग और कलियुग के संधिकाल में जब कालयवन, म्लेच्छो की बड़ी सेना लेकर श्रीकृष्ण को मारने के लिए पीछा करते हुए इस स्थान पर आया तो श्रीकृष्ण भागकर उस गुफा में घुस गए, जहाँ मुचकुंद सोये हुए थे। उन्होंने अपना पीताम्बर मुचकुन्द पर डालकर एक कोने में छुप

गये। क्रोध से भरा कालयवन जब उस गुफा में आया श्रीकृष्ण की पीताम्बरी को देखकर श्रीकृष्ण को वहाँ सोया जानकर मुचकुन्द पर लात का प्रहार किया। लात की चोट से मुचकुन्द जाग गये और इन्द्र से मिले वरदान के कारण जैसे ही उन्होंने क्रोध से कालयवन की तरफ देखा तो वही भस्म हो गया। इसके बाद श्रीकृष्ण ने मुचकुन्द को दर्शन दिये और वरदान मांगने को कहा तो मुचकुन्द ने भक्ति का वरदान मांगा। कालयवन से भागकर गुफा में जाने के कारण ही श्रीकृष्ण को रणछोड़ के नाम से जाना जाता है। इस घटना के पश्चात् मुचकुन्द ने इस स्थान पर यज्ञ किया और इन्हीं के नाम पर यह स्थल मुचकुन्द या मचकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में राजा मुचकुन्द श्रीकृष्ण भगवान के निर्देश से संसार रूपी सागर से मुक्ति पाने के लिए बृज के बद्रीवन में जाकर तप करने लगे। अन्त में श्रीहरि की भक्ति में लीन रहते हुए अपने प्राण त्याग दिये। कालयवन का जन्म ऋषि शेशिरायण (मार्ग्य) और अप्सरा रंभा के विवाह उपरांत हुआ था। भगवान शिव ने ऋषि शेशिरायण को वरदान दिया था कि उनका पुत्र किसी भी अस्त्र–शस्त्र से नहीं मारा जा सकेगा और उसे कोई क्षत्रिय परास्त नहीं कर पायेगा। वह मलेच्छ देश का शासक बना और अपनी अज्ञेय शक्ति के कारण शक्तिशाली यवन राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वर्तमान में मचकुण्ड में स्थित कुण्ड ने कमल पुष्पों की जल वनस्पति वाले एक सुन्दर व विशाल सरोवर का रूप ले लिया है। इसे चर्म रोगों को दूर करने वाले स्थल के रूप में जाना जाता है। इस कुण्ड के चारों ओर पक्के घाट हैं। यहाँ ऋषि पंचमी व देवषष्ठी को विशाल मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं और लोग अपने बच्चों का चूड़ाकरण संस्कार सरोवर के किनारे करवाते हैं। यहाँ के प्रमुख आकर्षण केन्द्रों में यहाँ स्थित पवित्र सरोवर और उसके चारों ओर 108 प्राचीन मंदिरों की शृंखला तथा सरोवर के चारों ओर 1 किलोमीटर लम्बा परिक्रमा मार्ग है। यहाँ साल में 2 बार लक्खी मेला आयोजित होता है। यहाँ पवित्र सरोवर के स्नान से चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है। सन् 1612 ई. में निर्मित शेर शिकार गुरूद्वारा यहाँ मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ आयोजित लक्खी मेले में लोग शादियों की मोरछड़ी और कलंगी का विसर्जन करते हैं।

यहाँ तक पहुँचने के लिए कई परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध है–हवाई मार्ग से यात्रा करने पर निकटतम हवाई अड्डा आगरा हवाई अड्डा है जो मचकुण्ड से 55 किलोमीटर दूर है। आगरा से बस, टैक्सी या ट्रेन के माध्यम से धौलपुर पहुँचा जा सकता है। रेल मार्ग से धौलपुर रेलवे स्टेशन दिल्ली, आगरा व ग्वालियर रेल मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। रेलवे स्टेशन से मचकुण्ड की दूरी 5–6 किमी की दूरी पर है जहाँ ऑटो, रिक्शा या टैक्सी से आसानी से पहुँचा जा सकता है। सड़क मार्ग से देखा जाये तो धौलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग–3 पर स्थित है जो जयपुर, आगरा व

ग्वालियर जैसे प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यहाँ पर निजी कार, टैक्सी व बस के माध्यम से आसानी से पहुँचा जा सकता है। धौलपुर के जी.टी. रोड़ से मचकुण्ड की दूरी सिर्फ 3 किलोमीटर है।

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जाये तो तीर्थों व तीर्थराज की यह परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही हैं जो राजस्थान में मूल धार्मिक आस्था के केन्द्रों के रूप में भलीभांति दृष्टिगोचर होती है। जलस्रोतों की उपलब्धता, पौराणिक मान्यताओं एवं लोकविश्वासों ने राजस्थान के तीर्थों को विशेष महत्व प्रदान किया है। मचकुण्ड का अध्ययन यह सिद्ध करता है यह स्थल सूर्यवंशी परम्परा, राजा मुचकुन्द तथा भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित पौराणिक कथाओं के कारण एक प्राचीन व पवित्र तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। यह स्थल अपने मेलों व धार्मिक लोक आस्था के कारण दशकों से अपनी एक अलग पहचान बनाये हुए है और समाज को सामाजिक सद्भाव व सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोये हुए हैं। राजस्थान के सुदूर पूर्व में स्थित यह स्थल धार्मिक पर्यटन का एक केन्द्र भी है जो आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यहाँ का प्राकृतिक जलकुण्ड, पर्वतीय परिवेश तथा प्राचीन मंदिर संरचनायें मचकुण्ड को विशिष्ट धार्मिक पहचान प्रदान करते हैं। यहाँ आयोजित मेले, धार्मिक अनुष्ठान एवं लोक परंपरायें इसकी सामाजिक–सांस्कृतिक जीवंतता को दर्शाते हैं। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जाये तो मचकुण्ड राजस्थान मे तीर्थराज की अवधारणा को साकार करता है तथा धार्मिक पर्यटन व सांस्कृतिक विरासत संरक्षण की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ

1ण गुप्ता, डॉ. मोहनलाल, "भरतपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन", राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2022, पृ. 138–139
2ण द्विरेफ, परमेश्वर, "राजस्थान के तीर्थ", समाचार केन्द्र, चिड़ावा, 1687, पृ. 1–4.
3ण जैन, डॉ. हुकुम चन्द्र एवं माली, डॉ. नारायण लाल, "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत", राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2022, पृ. 462.
4ण शर्मा, गणेश दत्त, "पूर्वी राजस्थान का सांस्कृतिक व पुरातात्विक वैभव", जवाहर कला केन्द्र एवं खण्डेलवाल पब्लिर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर 2016.
5ण श्रीमद्भागवत पुराण, स्कंध–10, मचकुण्ड–कालयवन–कृष्ण प्रसंग, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत् 2071
6ण हरिवंश पुराण–कृष्ण–कालयवन युद्ध प्रसंग, विष्णु पर्व, अध्याय–57, गीताप्रेस गोरखपुर, 2022, पृ. 551.
7ण विष्णु पुराण, पञ्चमः अंशः, राजा मुचकुन्द वंशावली, गीताप्रेस गोरखपुर, 2021.
8ण वाल्मीकि रामायण, उत्तर काण्ड, सर्ग संख्या 60 एंव 61, गीताप्रेस गोरखपुर, 2021